वह अब भी घुमतो है!

हरिशंकर परसाई

चर्च के भीतर बहुत-से लोग सर झुकाए खड़े हैं। फिर वे घुटनों के बल बैठ जाते हैं। सभी ध्यानमग्न हैं और भीतर का वातावरण गम्भीर और सात्विक है। ऐसे में मन और मस्तिष्क में कोई और विचार आ ही नहीं सकते - धार्मिक विचार ही प्रधानतः सभी का पथ-निर्देशन करते हैं। इस झुण्ड में एक नवयुवक मेडिसिन की पढ़ाई करने वाला भी है। वह भी पीसा के उस चर्च में घुटनों पर झुका हुआ है।

उसी समय चर्च का एक कर्मचारी भीतर आकर लम्बी चेन से टँगे तेल के लैम्प को नीचे उतारता है, लैम्प में तेल भरता है, लैम्प ऊपर चढ़ाता है और आगे बढ़ जाता है। लेकिन चेन हिलती रहती है और उसके साथ ही लैम्प भी हिलता-रहता है। थोड़ी-सी आवाज़ भी होती है... टिक... टैक... टिक... टैक... टिक... टैक...।

नवयुवक की प्रार्थना में व्यवधान उत्पन्न होता है। वह मुड़कर अपनी दृष्टि हिलते लैम्प पर जमा देता है और फिर विचारों का एक प्रबल प्रवाह उसके दिमाग में बहने लगता है।

वह अचानक चौंक पड़ता है। उसकी आँखों में चमक कौंधने लगती है और वह प्रसन्नता से भर जाता है। जब उसने हिसाब लगाया तो पाया कि लैम्प के इधर-उधर हिलने-डुलने में एक विशेष सम्बन्ध है। हर बार लैम्प के हिलने का समय एक-सा है। यह समय हर बार समान रहता है, जबकि लैम्प के हिलने की दूरी धीरे-धीरे कम होती जाती है।

"क्या यह सच है? या मैं कोई सपना देख रहा हूँ? यदि यह वाकई सच है, तो क्या मैंने किसी अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य का पता लगा लिया है? घर जाकर जाँचना चाहिए।" और वह नवयुवक घर की ओर दौड़ा चला जाता है।

प्रयोग आरम्भ हुआ

घर पहुँचकर उसने एक ही लम्बाई के धागे के समान टुकड़े लिए और इन धागों के छोर पर समान वज़न के शीशे के टुकड़े बाँध दिए। उसने अपने दादा, मजिओ टेडाल्डी को पास बुलाकर समझाया कि एक धागे को हिलाकर तुम उसके चक्करों का समय गिनो और मैं दूसरे धागे को हिलाकर उतने ही चक्करों का समय गिनता हूँ।

गैलीलियो के बूढ़े दादा पहले तो मुस्कुरा दिए, फिर कहना मानकर

उन्होंने वैसा ही किया। किसी बड़े परिणाम की प्रतीक्षा करके गैलीलियो ने दोनों पेण्डुलम हिला दिए। सौ बार यहाँ-वहाँ हिलाने के पश्चात नवयुवक ने जब समय देखा, तो दोनों दशाओं में समय एक-सा निकला।

इस तरह चर्च के लैम्प के हिलने-डुलने से आज संसार के पास प्रकृति का एक महत्वपूर्ण और उपयोगी नियम हाथ लग गया। इसी किस्म के विभिन्न अवलोकन और प्रयोग गैलीलियो अपनी अठहत्तर वर्ष की ज़िन्दगी में हमेशा करता रहा।

बचपन से ही गैलीलियो की आदत थी कि वह दूसरों के सूत्रों, प्रयोगों और विधियों की चिन्ता किए बगैर ही प्रयोग करता रहता और परिणाम निकालता था। संगीतकार का यह बच्चा बचपन से ही सितारों को घूरता रहता था और पिता की दृष्टि में यह उसकी विचित्र आदत में शुमार हो गया था। कक्षा में शिक्षक से व्याकरण या साहित्य पढ़ने की बजाए आकाश के बारे में सोचता, सितारों की दुनिया में खोया रहता और चन्द्रमा को पढ़ने का प्रयास करता।

शिक्षा-संघर्ष

बारह वर्ष की उम्र में गैलीलियो को पढ़ने के लिए स्कूल भेजा गया, पर स्कूल का वातावरण ऐसा था कि कुछ सीखने की जगह वह धार्मिक तथ्यों में रुचि लेने लगा। जब यह बात गैलीलियो के पिता को पता चली तो उस स्कूल से उसे वापस बुला लिया गया।

इस घटना का गैलीलियो पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि उसके दिल-ओ-दिमाग पर विज्ञान का गहरा असर था। गणित में दक्षता प्राप्त करने के

बाद वह विज्ञान के क्षेत्र में नवीन आविष्कार करने में लग जाना चाहता था। गैलीलियो के पिता की इच्छा थी कि उनका बेटा कपड़े का व्यापारी बने और अच्छा खासा द्रव्य एवं धन अर्जित करे। बाद में दोनों में एक समझौता हुआ, जिसके अनुसार उसे मेडिकल स्कूल में भर्ती किया गया।

मेडिकल स्कूल में भर्ती हो जाने के बाद भी गैलीलियो मेडिसन की पुस्तकों में आर्कमिडीज़ जैसे वैज्ञानिकों की किताब छिपाए रहता और गणित एवं विज्ञान की पढ़ाई के साथ ही वह छोटे-छोटे यंत्र बनाने में व्यस्त रहता। प्रोफेसरों का ज्ञान सीमित था और वे सोचते थे कि अरस्तु ने विज्ञान के क्षेत्र में जितना सम्भव था सब कर दिया है, सबकुछ खोज निकाला है। वे सब बात-बात में अरस्तू की खोजी और कही गई बातों के उदाहरण देते थे। उनका विचार था कि गैलीलियो का दिमाग खराब हो गया है, इसीलिए उसे व्यर्थ की बातों से दूर रखने के लिए उसके पिता को सूचित किया गया। गैलीलियो के पिता ने उसे अध्यापकों की सलाह पर अमल करने को कहा।

पर गैलीलियो ने हार मानने या अपने प्रयोग बन्द करने से इन्कार कर दिया।

नाराज़ होकर अध्यापकों ने गैलीलियो को मेडिकल का डिप्लोमा देने से इन्कार कर दिया। अन्ततः गैलीलियो को मेडिकल की पढ़ाई छोड़नी पड़ी। इस अवधि में गैलीलियो ने इटली के कुछ प्रसिद्ध गणितज्ञों पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था और वे उसे 'आधुनिक आर्कमिडीज़' भी कहने लगे थे।

पढ़ाई समाप्त करते ही गैलीलियो को पीसा विश्वविद्यालय में गणित पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया। एक तो वह पद खाली था, दूसरा गैलीलियो पढ़-लिखकर पैसा कमाना चाहता था जिससे जीवन की गाड़ी कुछ आगे बढ़ सके। इस पद पर कार्य करने के बाद भी उसे बहुत कम आमदनी हो पाती थी, जीवन-निर्वाह के लिए भी अपर्याप्त।

गैलीलियो ने इन मुसीबतों से हार नहीं मानी। वह केवल अरस्तू या किसी और वैज्ञानिक के फॉर्मूले या आविष्कार पर आस्था नहीं रखता था। खुद प्रयोगों को करके देखता और तब उन पर विश्वास किया करता। उसकी इस आदत ने बहुत-से शत्रु बना लिए। कक्षा में पढ़ाते तो विद्यार्थी व्यंग्यभरी-हँसी हँसते और साथी प्रोफेसर उनकी बुराई करते न थकते। अरस्तू द्वारा समझाए और लिखे गए सिद्धान्तों को वे सब सही मानते थे और उन सिद्धान्तों पर किसी भी प्रकार की टिप्पणी सहन नहीं कर सकते थे। ये टिप्पणी-मात्र भी अरस्तू की व्याख्याओं का खण्डन मानी जाती थी। साथी प्रोफेसरों ने कई बार गैलीलियो को चेतावनी दी कि वह अरस्तू के सिद्धान्तों का

खण्डन करना बन्द करे और यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो उसे अत्यन्त कड़े विरोध का सामना करना पड़ेगा। पर गैलीलियो तनिक भी विचलित नहीं हुआ।

गेलीलियो का दावा और लोगों का अविश्वास

वे कहा करते थे कि यदि किसी ऊँचे स्थान से एक-साथ भारी और हलकी वस्तुएँ गिराई जाएँ, तो दोनों असमान भार की वस्तुएँ धरती पर एक-साथ गिरेंगी। इस कथन को साथी प्रोफेसरों द्वारा चुनौती के रूप में स्वीकार किया गया। गैलीलियो से कहा गया कि वे विश्वविद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों की उपस्थिति में रोम की जनता के सामने प्रयोग द्वारा अपने कथन की पुष्टि करें। गैलीलियो ने यह चुनौती सहर्ष स्वीकार कर ली। स्थान और समय नियत कर लिए गए। पीसा की मीनार प्रयोग के लिए चुनी गई।

झुकी हुई पीसा की मीनार, रंग-बिरंगे कपड़ों में सजे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, मखमल के चोगों में गम्भीर मुद्रा लिए प्रोफेसर, शोरगुल करते हुए नागरिक, चारों तरफ आश्चर्यचकित आँखों के अनगिनत जोड़े, उत्सुकतापूर्ण वातावरण। आज तक अरस्तू के कहे गए को पत्थर की लकीर माना गया था। किसी ने उसके सिद्धान्तों को प्रयोग की कसौटी पर जाँचने की बात तक न सोची थी।

"पंख और एक बड़ा ठोस गोला एक-साथ गिरेंगे? अविश्वसनीय, सरासर झूठ! आज गैलीलियो की इज़्ज़त धूल में मिलेगी।" सब लोग इस नतीजे की साँस रोककर प्रतीक्षा कर रहे थे। "आज गैलीलियो का गर्व चूर हो जाएगा, उसका मस्तक शर्म से झुक जाएगा। अपनी गलती और हिमाकत की उसे अच्छी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

जय या पराजय?

नियत समय पर चेहरे पर विश्वास और सन्तोष के भाव लिए गैलीलियो पीसा की मीनार के पास आ खड़ा हुआ। सभी की साँस रुक-सी गई। गैलीलियो न तो चिन्तित दिखाई दे रहा था, न ही उसके हाव-भाव से किसी प्रकार का असन्तोष झलकता था। गैलीलियो के एक हाथ में दस पाउण्ड का और दूसरे हाथ में एक पाउण्ड का गोला था - दो ठोस, चमकदार गोले। गोलों को हाथों में लिए वह मीनार पर चढ़ने लगा तो चारों तरफ हल्का-सा शोरगुल फैल गया और कुछ लोग कुटिल-हँसी हँस पड़े। धीरे-धीरे चढ़कर वह ऊपर पहुँचा। ऊपर पहुँचकर एक बार फिर गैलीलियो ने मानो मूकभाव से चुनौती स्वीकार करते हुए विश्वास के साथ उपस्थित जनसमूह पर एक सरसरी निगाह डाली। पीसा की झुकी हुई मीनार के किनारे दोनों गोले रखकर उसने धीरे-से उन गोलों को धक्का देकर गिरा दिया।

पलक झपकते दोनों गोले एक साथ, एक समय धरती पर खट्ट से गिरे।

लोगों की ज़बान को मानो लकवा मार गया हो। कोई भी आदमी चूँ तक न कर सका। उनकी साँसें जहाँ की तहाँ रुक-सी गईं। आँखें क्षण भर के लिए फटी रह गईं।

गैलीलियो ने महान वैज्ञानिक अरस्तू के कथन को झूठा साबित कर दिया। इतना बड़ा साहस!

विश्वास न करने का मन हो रहा था, लेकिन अविश्वास का स्थान ही नहीं रह गया था।

इतने पर भी शेष प्रोफेसरों के मन में गैलीलियो के प्रति बेहद तीखी घृणा और विरक्ति थी। विश्वविद्यालय के अधिकारी उस दिन की राह देखने लगे जब वे किसी-न-किसी दोषारोपण के आधार पर गैलीलियो जैसे द्रोही और विकृत विचारों वाले प्रोफेसर को पदच्युत कर सकें। और उन्हें इसका मौका भी मिल गया। वहीं के राजकुमार ने एक मशीन तैयार करके गैलीलियो की सम्मति के लिए भेजी।

गैलीलियो ने कहा कि मशीन तो ठीक है, पर उससे काम करना असम्भव है। अब क्या था। उसके इस कथन की वजह से उसे पीसा विश्वविद्यालय से अलग कर दिया गया।

नया वातावरण, नए आविष्कार

गैलीलियो को पीसा से हटने की कोई विशेष कीमत नहीं चुकानी पड़ी क्योंकि शीघ्र ही पैडुआ विश्वविद्यालय में उसे नियुक्त कर लिया गया। वेतन भी पहले से ज़्यादा था और काम करने की आज़ादी भी।

यहाँ आकर उसे चैन मिला और मुक्त वातावरण ने उसे उत्साहित किया। अब एक बार फिर वह अपनी खोजों में व्यस्त हो गया। हर समय वह विद्यार्थियों से घिरा रहता। अपनी पैनी दृष्टि के बल पर गैलीलियो सैनिक-शिक्षा तक देने में सक्षम था। फलस्वरूप, उसके पास बहुत-से लोग शिक्षा लेने आते। कुछ सैनिक, कुछ सेना के उच्च-अधिकारी और कुछ राजनीतिज्ञ बनने आते थे।

अधिकांश गैलीलियो इन्हीं लोगों से घिरा रहता। कभी-कभी वह ऊबता भी और ऐसे समय वह शहर के मनोरंजक कार्यों में, उत्सवों में उत्साहपूर्वक भाग लेता - नृत्य करता, नाटक रचता और खेल-क्रीड़ा में भाग लेता। ये बदलाव उसे मानसिक और शारीरिक शान्ति प्रदान करते थे।

गैलीलियो की सफलताओं की कहानी ने उसकी ख्याति चारों ओर फैला दी थी। उसने खोज में रुचि रखने वाले स्नातकों के लिए एक नई संस्था की स्थापना की जिसमें बहुत-से विद्यार्थी और शिक्षा-शास्त्री सम्मिलित हो गए। इन्हीं के बीच रहते हुए गैलीलियो ने अनेक महत्वपूर्ण यंत्रों का आविष्कार किया। थर्मामीटर, टैलिस्कोप, कम्पास, सब इसी समय की देन है।

टैलिस्कोप बनाने के लिए गैलीलियो ने सदैव एक डर का आभार माना था। उसने लेंसों को इस ढंग से जमाया कि उनकी सहायता से दूर की चीज़ों को पास देखा जा सकता था। गैलीलियो ने कुछ अच्छी गुणवत्ता के लेंसों को इकट्ठा किया और गणित के सूत्रों को लगाकर एक टैलिस्कोप बनाया, जिसे प्रथम वैज्ञानिक टैलिस्कोप कहा जा सकता था। जनता के सामने टैलिस्कोप अर्थात् दूर-दर्शक यंत्र का प्रथम प्रदर्शन भी गैलीलियो द्वारा किया गया था। वेनिस में एक ऊँचे स्थान पर उसने वह टेलिस्कोप लगाया और सभी ने एक-एक कर दूर चरते हुए जानवर, चर्च जाते लोग, दूर के मकान देखे और आश्चर्य से दंग रह गए। रात में लोगों ने तारों और चाँद को देखा। इसके पहले कभी किसी ने सितारों को इतने नज़दीक से नहीं देखा था, इतना ताज्जुब नहीं किया था।

गैलीलियो के बनाए उस प्रथम दूरदर्शक यंत्र को खरीदने के लिए सैकड़ों लोग लालायित थे। सभी अच्छी खासी रकम देने को तैयार थे। पर गैलीलियो इन सबसे तनिक भी प्रभावित नहीं हुआ और वह पहला टैलिस्कोप उसने वेनिस के ड्यूक को

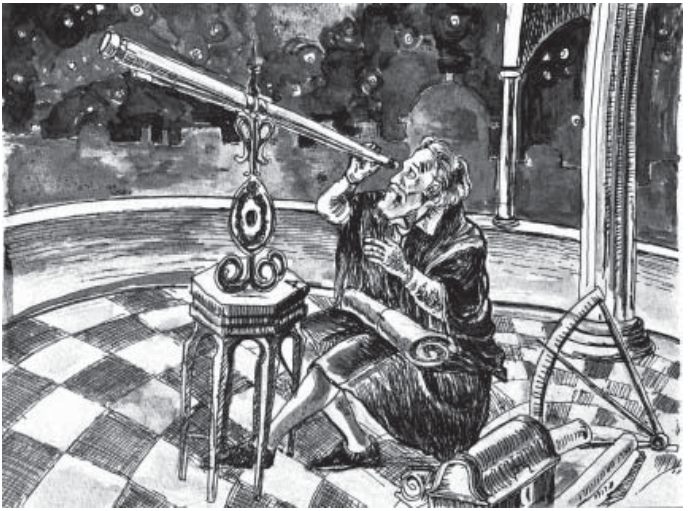

भेंट कर दिया। ड्यूक ने इस पर खुश होकर गैलीलियो को पैडुआ विश्वविद्यालय में गणित के प्रोफेसर पद पर नियुक्त कर दिया।

गैलीलियो इस पद से सन्तुष्ट नहीं था और वह वापस पीसा जाना चाहता था। पीसा विश्वविद्यालय में तो वह नियुक्त नहीं हुआ, पर फ्लोरेंस के ड्यूक ने उसे अपने दरबारी के रूप में स्वीकार कर लिया। यहीं से उस महान वैज्ञानिक के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी शुरू होती है।

गैलीलियो ने अपने टैलिस्कोप से आकाश की दुनिया का जो वास्तविक अध्ययन किया था, उसी को उसने एक किताब का रूप दे दिया जिसका नाम था *सिडेरस ननसियस* अर्थात् 'तारों का दूत'। इस पुस्तक में कहा गया था कि आकाश में कई ग्रह उपस्थित हैं, असंख्य तारे हैं, आकाश-गंगा है। ग्रहों के तो नाम तक गिनाए गए थे। पृथ्वी के सम्बन्ध में वह एक बिलकुल नई धारणा मानने लगा था। उसका मत था कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और सूर्य स्थिर है। पर वह अपनी पुस्तक में ऐसा नहीं लिख सका। उसने अपने मित्रों से ही यह साझा करके सन्तोष कर लिया।

परन्तु इस घटना की चर्चा सभी ओर होती थी। उसे कॉपरनिकस का अनुयायी माना गया और दण्ड दिया गया। चेतावनी देकर, उससे भविष्य में इस तरह की बात न कहने का आश्वासन ले लिया गया।

धर्म-विरोधी कथनों का दण्ड

वह पुनः वैज्ञानिक खोजों में जुट गया। दिन-रात एक करके कई नई

उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। इन महत्वपूर्ण आविष्कारों में इस परिकल्पना की पुष्टि भी थी कि सूर्य स्थिर है और हमारी पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है।

ऐसा कहना उन दिनों आज जैसा सरल न था। जनता और शासक धर्मान्ध थे। धर्म के विरुद्ध जाने का किसी में साहस न था, फिर चाहे वह महान वैज्ञानिक ही क्यों न हो।

खोज तो सही थी परन्तु इसे प्रकट करना मुश्किल था। गैलीलियो ने एक नई पुस्तक लिखी और उस पुस्तक में सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के चक्कर लगाने के बारे में भी विस्तारपूर्वक लिखा।

यह धार्मिक विश्वास के एकदम विपरीत था। अटूट धार्मिक विश्वास तो यह था कि पृथ्वी स्थिर है और सूर्य घूमता है। गैलीलियो ने चर्च की सत्ता को चुनौती दी थी। वह धर्म-विरुद्ध बात कर रहा था।

बस, फिर क्या था! आग लग गई। विरोध की आवाज़ तेज़ होती गई और इसे राज्य की ओर से एक अक्षम्य अपराध घोषित कर दिया गया।

इस अपराध का दण्ड केवल एक ही हो सकता था, मृत्युदण्ड। उसे रोम आने के लिए कहा गया - समन भेजा गया। गैलीलियो बीमार था और उसकी दशा ऐसी नहीं थी कि वह किसी भी प्रकार से रोम जा सके। शारीरिक और मानसिक स्थितियाँ इस यात्रा के लिए कदापि अनुकूल नहीं थीं, पर इस समन से किसी भी रीति से बचना मुश्किल था।

डॉक्टर ने सर्टीफिकेट दिया, "गैलीलियो शैय्या पर है। रोम जाने का मतलब होगा, उसकी निश्चित मृत्यु।"

इन बातों का, यहाँ तक कि डॉक्टरी मत का भी धर्मान्ध सत्ता पर कोई असर नहीं पड़ा। एक तो कड़ाके की सर्दी, दूसरे रोम जाने का मार्ग अत्यन्त दुखदायी। और सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह तथ्य कि गैलीलियो अत्यन्त वृद्ध। साक्षात् मौत मानो बुला रही थी। इस निमंत्रण को पूरा करने की किसमें हिम्मत, किसमें उत्सुकता हो सकती थी। रोम जाने के लिए उन दिनों पुराने ढंग की खच्चर-गाड़ियाँ रहा करती थीं – धीरे-धीरे, ऊबड़-खाबड़ सड़क पर एक लम्बा सफर।

जिसने सुना, उसने माथा ठोक लिया। कानून के ठेकेदारों को कोसा, धर्म के नाम पर होने वाले इस अत्याचार और पाप के प्रति घृणा दर्शाई। बहुत-से लोगों के मन में गैलीलियो के लिए अत्यन्त सहानुभूति थी।

वृद्ध गैलीलियो गाड़ी में बैठकर एक कड़ाके की सुबह रवाना हुआ। रास्ते भर उसके प्राण संकट में रहे। दम अब निकले या तब। जैसे-तैसे रोम पहुँच गया।

रोम में उस पर मुकदमा चला। मुकदमा लगभग छः माह तक चला। उस पर बाइबल, धर्म और पुरातन परम्पराओं के विरोध में जाने का आरोप लगाया गया। आज तक उसके अलावा बिरले ही किसी ने ऐसे साहस का प्रदर्शन किया था कि धर्म में कही गई बातों के विरोध में जाएँ।

विवशता और मृत्यु को आलिंगन

गैलीलियो को मजबूर किया गया कि वह सब के सामने स्वीकार करे कि जो कुछ उसने लिखा है, दुर्भावनावश और गलत लिखा है। "वास्तव में, बाइबल और धार्मिक विश्वास सही है। सूर्य ही धरती का चक्कर लगाता है। पृथ्वी स्थिर है।"

गैलीलियो खून के आँसू रो पड़ा। वृद्धावस्था में भी इतनी पीड़ा, इतनी मानसिक और शारीरिक यातना से गुज़रना पड़ेगा, सही तथ्यों का खण्डन करना पड़ेगा, अपने स्वतंत्र-सच्चे विचार व्यक्त करने पर पाबन्दी लगेगी, इसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

कोई अन्य उपाय भी सामने नज़र नहीं आता था।

विशाल जनसमूह के समक्ष उसे घुटनों पर झुकना पड़ा। फिर धर्म में निहित वे सब बातें उसने दुहराईं, जो वे लोग चाहते थे।

अपने कुछ साथियों के साथ गैलीलियो बाहर आया। कहा जाता है, बाहर आते ही वह बोल उठा, "लेकिन सच तो यही है कि सूर्य स्थिर है और हमारी पवित्र धरती माता ही सूर्य का निरन्तर चक्कर लगा रही है।"

गैलीलियो की गतिविधियों पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा दिया गया था, उसे न तो किसी वैज्ञानिक प्रयोग करने की इजाज़त थी और न कुछ लिखने की। फिर भी 'आरसेट्री' की जेल में कैदी बने गैलीलियो ने एक और पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करके, चुपके-चुपके उसे ट्राकेंड भिजवा दिया।

जेल में गैलीलियो की दृष्टि चली गई थी। खुद की लिखी पुस्तक जब छपी तो उसे वह देख भी न सका। लेकिन मृत्यु-शैय्या पर लेटे-लेटे उसने वह छपी पुस्तक अपने हाथों से सहला ज़रूर ली, इतना सुख तो उसे प्राप्त हो ही गया। पुस्तक को स्पर्श करने का सुख, सौभाग्य।

"मेरी पीड़ा का फल है यह पुस्तक, सबसे अधिक मैं इसे प्यार करता हूँ," मरते हुए गैलीलियो गुनगुनाया।

हरिशंकर परसाई (1924-1995): हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध व्यंगकार थे। व्यंग रचनाओं के अलावा उपन्यास और लेख भी लिखे। उनका जन्म जमानी, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में हुआ था। वे हिन्दी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के-फुल्के मनोरंजन की परम्परागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। साहित्य अकादमी पुरस्कार, शिक्षा सम्मान (मध्य प्रदेश शासन), शरद जोशी सम्मान आदि से सम्मानित।

सभी चित्र: हरमन: चित्रकार हैं। दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से फाइन आर्ट्स (चित्रकारी) में स्नातक और अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से विज़ुअल आर्ट्स में स्नातकोत्तर। भटिंडा, पंजाब में रहते हैं।

यह विज्ञान गल्प मित्र-बन्धु-कार्यालय, जबलपुर द्वारा सन् 1964 में प्रकाशित हरिशंकर परसाई की किताब *वैज्ञानिक कहानियाँ* से लिया गया है। यह किताब तैलंगाना क्षेत्र की ग्यारहवीं कक्षा के लिए नॉनडिटेल्ड प्रथम भाषा की पाठ्यपुस्तक के रूप में आन्ध्र प्रदेश शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृति के तहत प्रकाशित की गई थी।